ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

कबीर की काव्य कला

प्रा. डॉ. युवराज इंद्रजित जाधव
आदर्श महाविद्यालय उमरगा , ता. उमरगा जि. उस्मानाबाद , महाराष्ट्र.

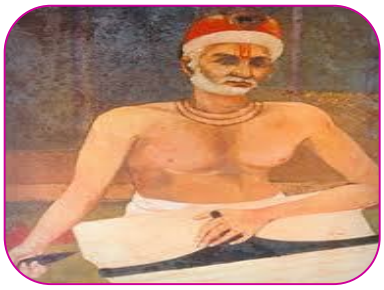

कबीर को वाणी के डिक्टेटर माना जाता है। उनकी अभिव्यक्ति में भाषा भी लाचार लगती है। कबीर अनपढ़ थे । उन्होंने स्वयं एक जगह लिखा है ''मसि कागद छुआ नही।'' इसलिए उनकी भाषा सधुक्कडी या खिचड़ी है। उनकी काव्य में अनेक भाषा, बोलियों के शब्द आये है। वे हमेशा घूमते फिरते हुए जीवन का सार बताते जाते थे इसके कारण उनके वाणी में वहाँ के शब्द आये है। उन्होंने अपने काव्य में सरलता, स्पष्टवादिता कों अपनाया है। उनके काव्य को साहित्यशास्त्र के नियमानुसार कसा जा नही सकता। उनके काव्य में जो अलंकारों का प्रयोग हुआ है वह अनायास आये है। उनके काव्य में शान्त रस का प्रयोग हुआ है। उन्होंने साहित्य में मानवता, हिन्दू-मुस्लिम एकता का महान संदेश दिया है। उनके संदेश अनगिनत युगों तक मानव को प्रेरणा देनेवाले है। उनके विचार पथभ्रष्ट जनता को संस्कारित करने का कार्य करते है। वे समाजसुधारक, दार्शनिक, विद्रोही, फक्कड कवि थे। जाति-पाँति के प्रति उनके मन में बेहद चीढ़ थी। उनकी अभिव्यक्ति अनुभूतिपूर्ण है वे कहते है 'मैं कहता हूँ आँखिन देखी ? तू कहता है कागद की लेखी।' कबीर के बीजक, साखी प्रसिध्द रचनाएँ है। कबीर अनपढ़ होने के कारण उनके काव्य को उनके शिष्यों ने प्रकाशित किया है। कबीर के काव्य में मानव केन्द्र में है । उनकी अभिव्यंजना शैली बड़ी सशक्त है। उनके साखियों में रमणीयता और अभिनवता एक साथ देखने के लिए मिलती है। वे जन्म से विद्रोही, समाजसुधारक, धर्म-सुधारक, दार्शनिक कवि थे। उन्होने ज्ञान, भक्ति, वैराग्य योग, हटयोग जैसे कठीन विषयों को अपने शैलीद्वारा सरल और सभी के सहज समझ में आ जाये ऐसा व्यक्त किया है। उनके अभिव्यंजना शैली ने कठीन, नीरस विषयों को भी मधूर बना दिया है उसे पढे-लिखे या अनपढ़ लोग भी आसानी से समझ लेते है। जैसे –

''बुरा जो देखन मैं चला जग में बुरा न कोय।
जो दिल खोजा आपना मुझ सा बुरा ना कोय ।।''

कबीर जाति – पॉति की निन्दा करते हुए कहते है -

''एक बूँद एके मलमूतर एक चाम एक गुदा।
एक जाति थे सब उतपन कौन बाहम्ण कौस सदा।।

उन्होंने कहा है - अलौकिक शक्ति की भक्ति करने का अधिकार सब को है। कोई बड़ा नही कोई छोटा नहीं सब ईश्वर 'रहीम' के संतान है।

''जाति-पॉति पूछो ना कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।''

उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम, ब्राम्हन, शुद्र को एक ही कतार में खड़ा किया है। हिन्दुओं के मुर्तिपूजा तीर्थ-व्रत, छापा तिलक का विरोध करते हुए कहते है।

"पत्थर पूजै हरि मिले तो में पूजू पहाड़।
ताते यह चक्की भली पीस खाये संसार।।"[1]

'ू।' ईश्वर की भक्ति करने के लिए बाहय आड़म्बर करने की जरूरत नही है। मन ही मन नामस्मरण करना चाहिए। उसी प्रकार मुस्लिमों के भी रोजा- नमाज रखने के झूठे दिखावे को उन्होंने फटकारा है।

'कंकड पत्थर जोरि के मस्जिद लई चुनाइ।
ता चढ़ि मुल्ला बाग दे क्या बहिरा होय खुदाय।।

अंधश्रध्दा, रूढि, परम्परा की अभिव्यंजना करते समय उनका स्वर विद्रोही हो उठा है। 'दिन को रोजा रखत है रात को हनत है गाय।
.....

कबीर के काव्य में बौध्दिकता अधिक मात्रा में देखने के लिए मिलती है लेकिन उसमें रोचकता एंवं सरसता यह गुण है। उसमे नीरसता या शुष्कता नही है। जीव, आत्मा, परमात्मा संबंधी वर्णन करते समय उन्होंने मधूर कल्पना को अपनाया है। उन्होने जप, तप, माला आदि के बारे में तर्क पूर्ण शैली को अपनाया है।

"जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना यह तत।।"[2]

उनके काव्य में भाव तत्व की भरमार है। काव्य में चित्रित श्रृगांर रस मनुष्य को पाप, पंक से निकालकर निर्मलता का दर्शन कराता है। जैसे –

'नैनो की कोठरी पुतरी पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारि कै पिय को लिया रिझाय।।
'प्रेम छिपाया ना छिपे जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोलै नही तो नैन देत है रोय।।

उनके भावना में सत्य की अनुभूति और ज्ञान की गंभीरता है। कबीर के काव्य में जो उलटबासियाँ है उसमें रहस्यानुभूति है। जैसे –

"दूलहिन गावहू मंगलाचार।
हमे घरि आयो हो राजा राम अवतार।।"[3]

कबीर मस्तमौला, फक्कड, झाड फटकार की व्यंजनाशक्ति को अपनाते थे। लेकिन मन के कोमल थे। वे कहते है 'लागी लगन छूटै नही जीभ चोच जरी जाय।
मीठा कहॉ अंगार में जाहि चकोर चबाय'

कबीर के काव्य में जो कल्पना तत्व है वह हवा की उँची उड़ान नही है। उसमें स्वाभाविकता यह गुण है। उनके कल्पनाशक्ति में व्यावहारिकता और कलात्मकता मिलजुलकर आयी है।

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर
पंथी को छाया नही फल लागे अति दूर।।"4

उनकी कल्पना और विषय जनजीवन से प्राप्त थे। साखियों में जीवन की नश्वरता या आत्मसमर्पण का भाव दिखाई देता है। कल्पना के कतई उदाहरण हमे देखने के लिए मिलते है। ' पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात। देखत ही छिप जायेगा ज्यौं तारा परभात।।' उनके काव्य में प्रतीकों की प्रचुरता है। अनपढ़ व्यक्तियों के लिए भी उनके प्रतीकों की अभिव्यंजना वरदान जैसे मिल गये है। कबीर भले ही शास्त्र के ज्ञाता, आचार्य नही थे लैकिन उनके पास काव्य कौशल्य था। उनके काव्य में अप्रस्तुत योजना प्रभावशाली रूप में देखने के लिए मिलती है। उनके काव्य में जो व्यंग्य आये है बड़े मार्मिक और प्रभावशाली है।

"नारी की झाँई परत अन्धा होत भूजंग।
कबीरा तिनकी कौन गति नित ही नारी संग।।5

उन्होंने नीतियों द्वारा समाज को जागृत करने का काम किया है। महान संदेशों को जनता तक पहूँचाने के लिए वाणी को अभिव्यक्ति दी थी। कबीर का वही स्वर आज भी अन्याय का प्रतिरोध कर मानव कल्याण की कामना को प्रवाहित कर रहा है। उन्होंने सामाजिक अन्याय को भोगा था इसलिए उन्होंने अपने काव्य में जाति-पाँति के जड़ पर ही आघात किया है तब उनकी वाणी विद्रोही अभिव्यंजित हुअी है।

संदर्भ ग्रंथ

1) कबीर ग्रंथावली - बाबू श्याम सुन्दर दास पृ. 34
2) कबीर ग्रंथावली - बाबू श्याम सुन्दर दास पृ. 37
3) वही – कबीरदास के पद- रामगौडी पृ. 02
4) वही – पृ. 41
5) कबीर ग्रंथावली - बाबू श्याम सुन्दर दास पृ. 50

सहाय्यक ग्रंथ

1) मध्यकालीन हिन्दी साहित्य भक्ति और रीति- रामजी मिश्र
2) हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास- रामनाथ शर्मा
3) हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्रीनावास शर्मा
4) अनुराग सरिता- त्रैमासिक पत्रिका अक्तु/नवम्बर 2011